श्री अन्नपुर्णा माता आरती
ओम जय अन्नपूर्णा माता, जय अन्नपूर्णा माता।
ब्रह्मा सनातन देवी, शुभ फल की दाता॥
अरकिुल पद्म वनिाशनि जिन सेवक त्राता।
जगजीवन जगदम्बा हरहिर गुणगाता॥
सहिं को वाहन साजे कुण्डल हैं साथा।
देव वृन्द जस गावत नृत्य करत ताथा॥
सतयुग रूपशील अत सिुन्दर नाम सती कहलाता।
हेमाचल घर जनमी सखयिन सँगराता॥
शुंभनशिुंभ बदिारे हेमाचल स्थाता।
सहस्त्र भुजा तनु धरकि चक्र लयिो हाथा॥
सृष्टरिूप तू ही है जननी शवि संग रंगराता।
नदी भृंगी बीन लही हे मदमाता॥
देवन अरज करत तव चति को लाता।
गावत दे दे ताली मन मे रंगराता॥
श्री प्रताप आरती मैया की जो कोई गाता।
सदा सुखी नति रहता सुख संपत्त पिाता॥
ओम जय अन्नपूर्णा माता, जय अन्नपूर्णा माता ।
ब्रह्मा सनातन देवी, शुभ फल की दाता॥